8

कार्ययोजना

सुधा रानी तैलंग*

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा छात्र जीवन की आधारशिला, नींव है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा से ही बच्चों के शारीरिक, मानसिक व चारित्रिक गुणों व संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* के अंतर्गत 'अनिवार्य व नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान' में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को विद्यालय में नामांकित कराने व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाना निश्चित ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। हर गाँव व शहरों के गली-मोहल्ले में प्राइवेट स्कूलों के लगे साइन बोर्ड व गरीब से गरीब तबके के आदमी का अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में ही पढ़ाने के मोह ने आम आदमी के मन में यह धारणा बना दी है कि प्राइवेट स्कूलों में ही बेहतर पढ़ाई होती है।

पर उनकी यह धारणा गलत है क्योंकि देखा जाए तो शासकीय विद्यालयों में हिंदी माध्यम से पढ़े हुए कितने ही बच्चे बड़े होकर अच्छे पदों पर काम करते देखे जा सकते हैं। मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा की बोर्ड परीक्षाओं में, मैरिट लिस्ट में भी सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं का आँकड़ा हमेशा आगे रहता है। इसके बावजूद लोगों में मिथ्या धारणा है कि प्राइवेट स्कूलों में ही बेहतर पढ़ाई होती है। मध्यप्रदेश में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर सुधार के लिए यूँ तो शासन द्वारा अनेक योजनाएँ, नवाचार, व सेवाकालीन विषयवार प्रशिक्षण समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की योजनाएँ पूरे देश में शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए कार्य कर रही हैं। फिर भी केंद्र व राज्य द्वारा किए गए अथक प्रयास व अपार धनराशि के उपलब्ध कराए जाने के बाद भी स्थिति में अपेक्षित व उल्लेखनीय बदलाव नहीं लाया जा सका है। शासन का यह निर्णय निश्चित ही स्वागत योग्य कहा जा सकता है कि इस सत्र से प्रदेश में पाँचवीं व आठवीं की परीक्षाएँ बोर्ड स्तर पर आयोजित की जाएँगी। इससे एक तो शिक्षा का स्तर बढ़ेगा और दूसरा हाईस्कूल बोर्ड परीक्षाओं के आँकड़ों में निश्चित ही बढ़ोतरी होगी।

मैं अभी हाल ही में अपने दिल्ली प्रवास के दौरान एक दिन घूमते-घूमते मयूर विहार में स्थित नगर निगम के सर्वोदय विद्यालय को प्राइवेट स्कूल जानकर देखने चली गई पर वह सरकारी स्कूल है यह पता लगने पर मुझे बेहद आश्चर्य हुआ। साफ़-सुथरा परिसर, सुंदर बगीचा, झूले व बच्चों द्वारा ही संचालित

*उच्च श्रेणी शिक्षिका, शासकीय सरोजिनी नायडू, उ.मा.कन्या विद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश

लाइब्रेरी देखकर मुझे लगा कि अगर हम प्रयास करें तो सरकारी स्कूलों को भी प्राइवेट स्कूलों जैसा बना सकते हैं। अपने लगभग तैंतीस सालों के अध्यापन के अनुभव के आधार पर कुछ सुझावों को शिक्षा विभाग में शामिल करवाना चाहती हूँ ताकि प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी स्कूल भी प्राइवेट स्कूलों से कहीं पीछे नहीं रहें। यदि थोड़ा-सा प्रयास किया जाए तो प्राथमिक शिक्षा को और भी बेहतर बनाया जा सकता है। इसके लिए एक ठोस कार्ययोजना की आवश्यकता है।

कार्ययोजना

प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु सुझाव

प्राइमरी स्तर से लेकर मिडिल स्तर की कक्षाओं में राजस्थान व उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग की तर्ज़ पर शास्त्रीय संगीत को एक अनिवार्य विषय के रूप में शुरू किया जाना चाहिए ताकि बच्चों के मानसिक, नैतिक विकास व स्वस्थ मनोरंजन के साथ वे हमारी सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित हो सकें। आंध्रप्रदेश शासन ने अभी हाल ही में स्कूली बच्चों के लिए कुचीपुड़ी नृत्य को पाठ्यक्रम में अनिवार्यत: शामिल किया है।

खेल-खेल में रुचिकर शिक्षा

कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों के अलावा खिलौने, ब्लॉक्स, पज़ल्स गेम आदि उपलब्ध कराए जाएँ ताकि खेल ही खेल में बच्चे सीख सकें जिससे उनका मानसिक, बौद्धिक व तार्किक विकास हो सके।

आकर्षक व स्वच्छ, सुंदर, स्कूल परिसर व कक्षा कक्ष

प्राइमरी स्कूलों का भवन सुंदर व आकर्षक हो ताकि प्रवेश करते ही बच्चे खुश हो जाएँ। स्कूल परिसर में पेड़-पौधे तथा हरियाली हो, झूले हों। स्कूल भवन की दीवारों में रंग-बिरंगे चित्र, स्लोगन, सुवाक्य लिखे हों। बच्चों के क्लास रूम आकर्षक हों। स्कूल का वातावरण साफ़-सुथरा व आकर्षक हो। कक्ष का नाम भी किसी महापुरुष, वैज्ञानिक या विद्वान के नाम पर हो। अच्छी लाइब्रेरी हो ताकि बच्चे ज्ञानवर्द्धक किताबें पढ़ सकें।

दीवारों में मिले स्पेस

प्राइमरी स्तर के क्लास रूम्स या एक अलग कक्ष की दीवारों में बच्चों को सीखने के लिए जगह देनी चाहिए ताकि खेल ही खेल में वे दीवारों में स्वयं गिनती, पहाड़े, बारहखड़ी लिखकर, चित्र बनाकर अपनी भावनाओं, रुचि व प्रतिभा को अभिव्यक्त कर सकें। स्वयं सीख सकें।

रंग-बिरंगी किताबें

किताबें भी ग्लो रंगीन पेज़ों की व चित्रों से सजी हों। कवर पृष्ठ बेहद आकर्षक हो। प्राइमरी स्तर में केवल भाषा शिक्षण पर ही ज़ोर दिया जाए। हिंदी में बारहखड़ी, अक्षर संयोजन, वाक्य-निर्माण, छोटी-छोटी कविताएँ व कहानियाँ शुद्ध उच्चारण के साथ सही लिखना व गणित में गिनती, पहाड़े, बेसिक जोड़-घटाना आदि को व अंग्रेज़ी में एल्फाबेट्स, मीनिंग्स व पोयम्स पर ज़ोर दिया जाए। बच्चों को सुलेख व डिक्टेशन का नियमित अभ्यास कार्य करवाया जाए।

Chapters- PS-July2016.indd 43 22-08-2017 AM 10:01:03

बस्ते का बोझ हो कम

प्राइमरी स्तर के कोर्स को कम किया जाना चाहिए। कम कोर्स में सारगर्भित व महत्वपूर्ण विषय रखे जाएँ, जैसे — भारतीय संस्कृति से जुड़े तीज-त्योहार, पर्व, महापुरुष, देशभक्तों की वीरगाथाएँ, नीतिकथाएँ, प्रेरक प्रसंग, दर्शनीय स्थल, पारिवारिक रिश्तों पर आधारित कहानी, रोचक नाटक, हास्य से जुड़े प्रसंग, छोटे-छोटे आविष्कार, इतिहास से सामान्य ज्ञान पर आधारित विषय रखे जाएँ।

रोचक व ज्ञानवर्धक पाठ्यक्रम

प्राइमरी स्तर के बच्चों के पाठ्यक्रम में पंचतंत्र की कथाओं के पात्रों को कार्टून के रूप में रोचक व अन्य नैतिक, शिक्षाप्रद, प्रेरक प्रसंग, कहानियों की कार्टून सीरीज व पाठ को चित्रकथाओं के रूप में शामिल किया जाए तो निश्चित ही बच्चे प्रेरित होकर रुचिपूर्वक उसे ग्रहण करेंगे।

प्राइमरी स्तर की कक्षाओं का पाठ्यक्रम ऐसा हो कि बच्चे पढ़ाई में रुचि लें। स्कूल में बच्चे गैरहाज़िर न हों।

प्रतियोगिताएँ व पुरस्कार

स्कूलों में प्राइमरी स्तर के बच्चों के लिए साल में दो बार चित्रकला, निबंध, डिक्टेशन, सुलेख, रंगोली, गीत, नृत्य, फ़ैंसी ड्रेस, अभिनय व खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी चाहिए व उन्हें पुरस्कार भी दिए जाएँ तो निश्चित ही बच्चों की रुचि सरकारी स्कूलों में होगी व नियमित उपस्थिति में भी बढ़ोतरी होगी।

खेलों की अनिवार्यता

प्राइमरी व मिडिल स्तर के बच्चों के लिए एक खेल शिक्षक भी अवश्य होना चाहिए ताकि बचपन में ही उनमें छिपी खेल प्रतिभा को निखारा जा सके व उनका शारीरिक व मानसिक विकास हो सके। खो-खो, कबड्डी, दौड़, रस्सी-कूद, बैडमिंटन जैसे खेलों पर ज़ोर दिया जाए, तो निश्चित ही बेहतर खिलाड़ी तैयार होंगे।

परीक्षा प्रणाली में बदलाव

प्राइमरी स्तर तक की परीक्षाओं के प्रश्न पत्रों में ज़्यादातर वस्तुनिष्ठ प्रश्न हों। सही विकल्प, जोड़ी मिलाओ, शब्द पहेली, चित्रों के द्वारा व रिक्त स्थान की पूर्ति के अलावा प्रश्न पत्र में ही उत्तर लिखने का प्रावधान हो। बच्चों को अलग से उत्तर पुस्तिका न दी जाए। ऐसे में बच्चे मन लगाकर रुचिपूर्वक लिखेंगे। प्रश्न पत्र उत्तर पुस्तिका का आकार बड़ा हो ताकि बच्चे उत्तर सही ढंग से लिख सकें।

वार्षिक परीक्षा के रिजल्ट में 80 अंक लिखित परीक्षा के व 20 अंक प्रोजेक्ट कार्य, चार्ट चित्र व फाइल निर्माण के दिए जाएँ ताकि वे बचपन से ही रचनात्मक गतिविधियों से जुड़ सकें। तिमाही व छमाही परीक्षा के अंकों को भी जोड़ा जाए ताकि बच्चे नियमित रूप से साल भर पढ़ाई कर सकें।

पहल

सरकारी स्कूलों के शिक्षक, कर्मचारी व अधिकारी भी यदि सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाएँ तो निश्चित ही सरकारी स्कूलों की प्राइमरी शिक्षा की दिशा व दशा बदल सकती है। भविष्य उज्ज्वल बन सकता है।

निष्कर्ष

प्राथमिक शिक्षा ही संपूर्ण छात्र जीवन की आधारशिला है। यह विडंबना ही है कि आज प्राथमिक शिक्षा का

Chapters- PS-July2016.indd 44 22-08-2017 AM 10:01:03

स्तर दिनों-दिन गिर रहा है। बच्चे शुद्ध हिंदी लिख नहीं पाते हैं। पहाड़े याद नहीं हैं। प्राइवेट स्कूलों के बाहरी स्वरूप को देखकर प्राय: अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में ही भेजना चाहते हैं चाहे वे स्कूल उनके बच्चों के कल को बेहतर बना पाएँ या नहीं बना पाएँ क्योंकि आम जन के मन में सरकारी स्कूलों की छवि रहती है पुरानी बिल्डिंग, सीलन भरे अँधेरे कमरे।

पर देखा जाए तो आज ऐसा नहीं है। हालात सुधरे हैं। सरकारी स्कूलों में भी स्मार्ट क्लासेज़, टी.वी., कंप्यूटर्स हैं। फिर भी हमारे शिक्षा विभाग में हाईस्कूल, बोर्ड परीक्षाओं की पढ़ाई, व्यवस्था, सुविधाओं पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है। खर्च किया जाता है जबकि देखा जाए तो प्राइमरी स्कूलों में पढ़ाई के स्तर, शिक्षक प्रशिक्षणों के साथ भौतिक सुविधाओं व बच्चों की ज़रूरतों की ओर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता।

बच्चों के मनोविज्ञान व रुचियों की आवश्यकता के अनुरूप योजनाएँ नहीं बनाई जातीं। हम बच्चों पर पढ़ाई का बोझ लाद देते हैं। उनके मन की बातों को कभी साझा नहीं करते कि उन्हें क्या अच्छा लगता है। छोटे बच्चे हमेश खेल ही खेल में अनुकरण द्वारा ही जल्दी सीखते हैं। यदि बच्चों की अभिरुचियों के अनुरूप ही पाठ्यक्रम, किताबें, आकर्षक स्कूल भवन, कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, रंग-बिरंगी स्कूल ड्रेस, खेल के मैदान हों तो निश्चित ही प्राइवेट स्कूलों से लोगों का मोह भंग होगा। मोटी फ़ीस नहीं दे पाने के कारण अधिकांश लोग गली-गली में साइन बोर्ड लगे छोटे से प्राइवेट स्कूलों में दाखिला करवा देते हैं पर वहाँ बच्चों को अधकचरा ज्ञान मिलता है।

ऐसे में यदि सरकारी स्कूलों में एक्सीलेंस, मॉडल स्कूलों जैसी सुविधाएँ दी जाएँ, साथ ही प्राइमरी शिक्षकों को विशेष दर्जा दिया जाए तो निश्चित ही प्राइमरी शिक्षा का स्तर बेहतर बन सकता है। इससे सरकारी स्कूलों में बच्चों की दर्ज संख्या में बढ़ोतरी होगी। हमारी बाल पीढ़ी बेहद कुशाग्र बुद्धि है। बस आवश्यकता है नन्हे-मुन्नों की अभिरुचियों के अनुरूप ताना-बाना बुनते हुये उनके इंद्रधनुषी सपनों को साकार करने की। शासन की छोटी-सी कोशिश के साथ अभिभावकों व आम जन का सहयोग ही आने वाली बाल पीढ़ी के सुनहरे कल को सँवार सकता है।

Chapters- PS-July2016.indd 45 22-08-2017 AM 10:01:03